Toppersnotes
Unleash the topper in you

UPTET

UTTAR PRADESH BASIC EDUCATION BOARD

उ.प्र. शिक्षक पात्रता परीक्षा

उच्च प्राथमिक स्तर (कला वर्ग)

भाग–3

सामाजिक अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

इतिहास

1.	सिंधु घाटी की सभ्यता	1
2.	वैदिक सभ्यता	6
3.	जैन धर्म	12
4.	बौद्ध धर्म	13
5.	वैष्णव धर्म	14
6.	शैव धर्म	14
7.	ईसाई धर्म	14
8.	मुस्लिम धर्म	15
9.	मगध राज्य का उदय	15
10.	मौर्य साम्राज्य	17
11.	मौर्यतर काल	19
12.	गुप्त काल	20
13.	गुप्तोत्तर काल	21
14.	मध्यकालीन भारत	22
15.	मुगल वंश	26
16.	1857 का विद्रोह	30
17.	सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन	31

भूगोल

1.	परिचय (ब्रम्हांड)	45
2.	देशांतर रेखाएँ	54
3.	स्थल मण्डल	55
4.	भूकम्प	56
5.	ज्वालामुखी	58
6.	पर्वत	59
7.	पठार	62
8.	मैदान	63
9.	मरुस्थल	64
10.	झील	66
11.	मिट्टियाँ	69
12.	वायुमण्डल	71
13.	जलमण्डल	72
14.	एशिया महाद्वीप	75
15.	अफ्रीका महाद्वीप	76
16.	उत्तरी अमेरिका	77
17.	यूरोप	79
18.	ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप	80
19.	अण्टार्कटिका महाद्वीप	82
20.	फसलें	86

Toppersnotes
Unleash the topper in you

सिन्धु घाटी सभ्यता

[2350 ई०पू० – 1750 ई०पू०]

सिन्धु घाटी सभ्यता

- सिन्धु सरस्वती
- हड़प्पा सभ्यता
- ताम्र युगीन या कांस्य युगीन

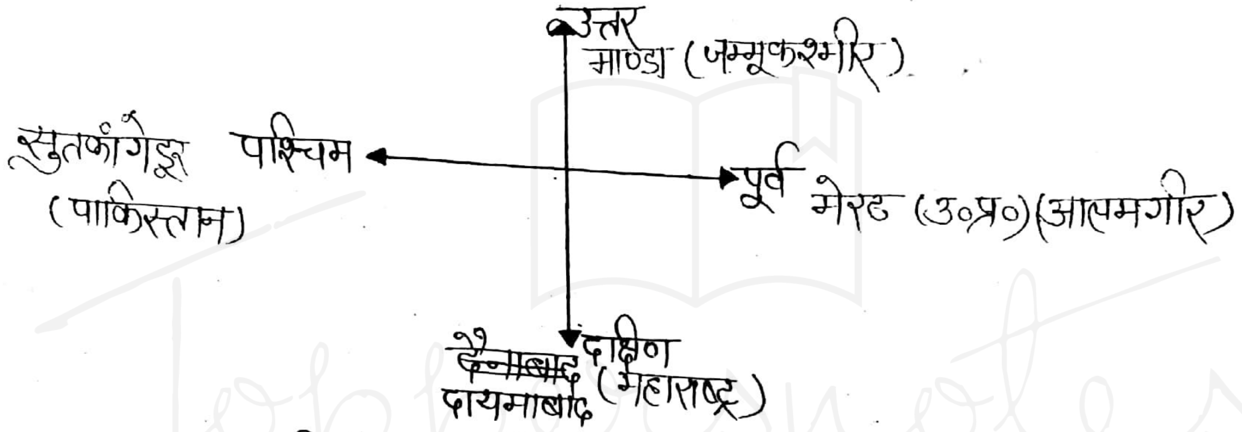

* सन् 1921 ई० में महानिदेशक जॉन मॉर्शल के नेतृत्व में दयाराम सहानी ने हड़प्पा की खोज की।
* सन् 1922 ई० में राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो की खोज की। (मोहन जोदड़ो सबसे बड़ी सभ्यता में एक मानी गई)
* मोहनजोदड़ो को मृतकों का टीला कहा जाता है।
* हड़प्पा सभ्यता वर्तमान में तीन देशों में साक्ष प्रकट करती है।
  1] पाकिस्तान 2] अफगानिस्तान 3] भारत
* सिन्धु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल

1] हड़प्पा ⇒ सिन्धु सभ्यता में यह स्थल पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में माण्टगोमरी जिले में रावी नदी बाँये तट पर स्थित है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* इसकी खोज सन् 1921 ई० में जॉन मार्शल के नेतृत्व में दयाराम साहनी ने की थी।
* हड़प्पा 5 K.M के इर्द गिर्द फैला हुआ था।
* इस स्थल पर दक्षिण दिशा से समाधीयाँ प्राप्त हुई। जिसे R-37 नाम दिया गया था।
* हड़प्पा में स्वास्तिक चिन्ह का उल्लेख मिलता है।

मोहनजोदड़ो ⇒ * यह सिन्ध प्रान्त के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के दाँये तट पर इस स्थल की खोज की है।

* मोहन जोदड़ो को प्रेतो या मृतको का टीला कहा जाता है।
* इसे सिन्धु का बाग भी कहा जाता है।
* इस स्थल से विशाल स्नानागार प्राप्त हुआ है जिसकी :- लम्बाई ⇒ 11.88 मी० चौ० ⇒ 7.01 मी ऊँ० ⇒ 2.43 मी०
* मोहन जोदड़ो से एक विशाल अन्नागार प्राप्त हुआ जो सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है।
* इसकी लम्बाई 45.71 मी० और चौड़ाई 15.23 मी० थी।
* हड़प्पा और मोहनजोदड़ो एक दूसरे से 483 km दूर स्थित सिन्धु नदी से जुड़े हुये थे।
* पिग्गट ने मोहन जोदड़ो और हड़प्पा को जुड़वाँ राजधानी कहा था।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

चन्हूदड़ो ⇒ * सन 1931 में एन॰ जी॰ मजूमदार ने इसकी खोज की थी।
* यहाँ पर झूकर और झांकर संस्कृति विकसित हुई।
* वैज्ञानिक मैके ने यहाँ मनका बनाने का कारखाना खोजा।
* चन्हूदड़ो में बिल्ली का पीछा करते हुये कुत्ता के पन्जो का निशान ईंटो पर मिले है
* यहाँ से लाली, काजल तथा उस्तरा प्राप्त हुआ है
* चन्हूदड़ो से पाइपनुमा नालियाँ भी प्राप्त हुई है।

लोथल ⇒ * सन 1954 में S.R Rao ने लोथल की खोज की।
* यह शहर अहमदाबाद में भोगवा नदी के तट पर स्थित था।
* इस शहर से सती प्रथा के साक्ष्य मिले है।
* लोथल से रंगाई कुण्ड भी मिला था।

* कालीबंगा ⇒ * इसकी खोज सन 1951 में अमलानन्द घोष ने की थी।
* यहाँ से काली काँच की चूड़ियाँ और जुते हुये खेत मिले।
* यहाँ युगल समाधान मिला है (पत्नी, पति)

रोपड़ ⇒ * यह स्थान भारत में पंजाब प्रान्त में सतलज नदी के बाँये तट पर स्थित है।
* इसकी खोज 1953 से 1956 ई० में यशदत्त शर्मा ने की थी।
* रोपड़ से मनुष्य के शव के साथ पालतू कुत्ते के दफनाये जाने प्रमाण मिला है
* रोपड़ से ही चावल के स्रोत मिले है

Toppersnotes
Unleash the topper in you

कोटदीजी ⇒ * इसकी खोज सन 1935 ई० में घुर्ये ने की थी।
* कोटदीजी से पत्थर के औजार मिले हैं।

राखीगढ़ी ⇒ * यह हरियाणा के घग्घर नदी पर स्थित है।
* इसकी खोज 1969 में सूरज भान ने की थी।
* यह सैन्धव वासियो का सबसे बड़ा नगर था।

सुरकोटदा ⇒ * इसकी खोज सन 1964 में जे० पी जोशी ने की थी।
* यहाँ से घोड़े की अस्थियाँ मिली है।
* यह गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है
* इस स्थान से हड्डियो से भरा कलश मिला तथा अण्डाकार कब्र भी मिली है

धौलावीरा ⇒ * यह गुजरात के कच्छ जिले में खादिर नामक द्वीप में जिससे स्थानीय लोग 'बैठ' के नाम से जानते है
* इसकी खोज सन 1966 से 1968 में जेपी जोशी ने की थी।
* धोला का अर्थ सफेद होता है तथा वीरा का अर्थ कुँआ होता है।
* अतः यह एक पुराना कुँआ है जिसका नाम धौलावीरा पड़ गया है

वनवाली ⇒ * यह हरियाणा के हिसार जिले में स्थित है जो घग्घर नदी के तट पर स्थित है।
* इसकी खोज सन 1974 में आर०एस विस्ट ने की।

सिन्धु सभ्यता में कृषि

* इनके समय फावड़ा नही था। लेकिन हल रेखा का प्रमाण मिला है।

* सिन्धु सभ्यता के लोग सिंचाई नदियों और कुँओ से किया करते थे
* जहाँ से नौ फसलो का उल्लेख मिला है। जिनमे **गेहूँ और जौ** प्रमुख्य फसलो में एक है।
* लोथल तथा रंगपुर से चावल के टुकडे कम प्राप्त हुये है।
* लोथल से आटा पिसने के दो पाट मिले है।
* इस सभ्यता की लिपि कुछ वैज्ञानिको के अनुसार भाव चित्रात्मक है।
* इस लिपि को ब्रोस्ट्रो फैदम कहते है। जो पंक्ति में दाँये से बाँये तथा दूसरी पंक्ति में बाँये से दाँये लिपिबद्ध है।

अन्य महत्वपूर्व स्थल

स्थल	क्षेत्र
* मेहरगढ़	**बलुचिस्तान** (पाकिस्तान)
* डेरा इस्माइल खान	**पंजाब** (पाकिस्तान)
* राखीगढ़ी	हरियाणा
* माण्डा	जम्मू कश्मीर राज्य
* रोजड़ी एवं प्रभासपाटन	गुजरात

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वैदिक सभ्यता

वैदिक काल → 1500 ई०पू० - 600 ई०पू०

वैदिक काल
- ऋग्वैदिक काल या पूर्व वैदिक काल (1500 BC - 1000 BC)
- उत्तर वैदिक काल (1000 BC - 600 BC)

ऋग्वैदिक काल → * ऋग्वैदिक आर्यो ने जिस विस्तृत क्षेत्र का निर्माण किया उसे सप्तसैन्धव प्रदेश कहा गया।

* इस क्षेत्र में प्रमुख्य सात नदियाँ प्रवाहित है। सिन्धु, सतलज, रावी चिनाव, झेलम, व्यास, सरस्वती (पवित्र नदी)।

सामाजिक सँरचना → * ऋग्वैदिक सामाजिक संरचना का आधार परिवार था
* परिवार पितृसत्तात्मक था।

* परिवार के मुखिया को "कुलप" कहा जाता था।
* महिलाओ को शिक्षा प्राप्त करने तथा राजनैतिक संस्थाओ में सामिल होने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी।
* ऋग्वैदिक काल मे अपला, घोषा, लोपमुद्रा, सिकता जैसे विदुषी महिला के ज्ञान का प्रमाण मिलता है।
* ऋग्वैदिक काल में ऋग्वेद मे पुरुष सूक्त को चार वर्णो में विभाजित किया → ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, सूद्र की चर्चा मिलती है।
* किन्तु यह विभाजन 'जन्ममूलक' ना होकर कर्म मूलक था।
* ऋग्वेद के 9 वें मण्डल में सोम का वर्णन है।
* गाय को अघन्या (ना मारने योग्य) माना जाता था।
* ऋग्वेदिक में संस्कारो को महत्व दिया जाता था।
* लम्बे समय तक विवाह ना करने वाली महिला को अम्माजू कहते थे।
* बाल-विवाह की प्रथा नही थी। समाज मे सती प्रथा का कोई अस्तित्व नही था। विधवाओ को पुनर्विवाह की स्वकृति थी।
* ऋग्वैदिक आर्यो के मनोरंजन के साधन सँगीत, नृत्य, घुड़दौड़, चौपड़ आदि खेल थे।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* परिधान → वास — कमर के ऊपर
→ अधिवास — कमर के नीचे
→ उष्णीष — पगड़ी को

* आर्थिक जीवन ⇒ * अर्थव्यवस्था में पशुओ का महत्व सर्वाधिक था।
* पशुपालन की तुलना में कृषि का महत्व नगण्य था।

* ऋग्वेद में उर्वरा ⇒ * जुते हुये खेतो को कहा जाता था।
* खिल्य ⇒ पशुचारण योग्य (चारगाह) को कहा जाता था
* सीर ⇒ हल को।
* सृणि ⇒ हसिया को।
* करीष ⇒ गोबर की खाद्य
* कूपो ⇒ कुँआ के लिए प्रयोग होता है।
* सीता ⇒ हल से बनी नालियो के लिये प्रयोग होता था

* पर्जन्य ⇒ बादल
* कीनांश ⇒ हलवाहे
* अवट ⇒ कुँआ

ऋग्वैदिक काल की नदियाँ

प्राचीन	आधुनिक
क्रुमु	कुर्रम
कुंभा	काबुल
वितस्ता	झेलम
आस्किनी	चिनाब
परूष्णी	रावी
शतुद्रि	सतलज
विपाशा	व्यास
सदानीरा	गंडक
दृषद्वती	घग्घर
गोमती	गोमल
सुवस्तु	स्वात
सिन्धु	सिन्धु

* सत्य मेव जयते – मुण्डकोपनिषद से लिया गया है।
* तथा असतो मा सद्गमय ऋग्वेद से लिया गया है।
* गायत्री मंत्र ऋग्वेद में मिलता है।
* ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में इसकी रचना विश्वामित्र ने की

Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजनैतिक संस्थाएं

कुल (कुलप)
↓
ग्राम (ग्रामणी)
↓
विश (विशपति)
↓
जन (जनपति या राजा)
↓
जनपद

सभा	समिति	विदथ
बड़े लोगो के संस्था	आम जनता का समूह	आर्यों की सबसे प्राचीन संस्था

* इन्द्र, वरुण, सूर्य, अग्नि इत्यादि ऋग्वैदिक देवताओ में प्रमुख थे। जिनमें इन्द्र सर्वप्रमुख देवता थे। जिसे पुरन्दर कहा गया है।
* इसके बाद अग्नि एवं वरुण का स्थान है वरुण को ऋतस्यगोता तथा अग्नि को जाति वैदस्थ कहा गया।

उत्तर वैदिक काल

* आर्यो ने स्थाई जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दिया पशुपालन की जगह कृषि को अधिक महत्व मिलने लगा।
* उत्तर वैदिक आर्यो ने जिस विस्तृत क्षेत्र पर निवास किया उसे आर्यावर्त की संज्ञा दी गई।
* सामाजिक संरचना ⇒ * समाज में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट उत्तर वैदिक काल में दर्ज की गई। महिलाये अब आर्थिक स्वतन्त्र नहीं थी उन्हे सभा की सदस्यता से वंचित किया गया।
* उत्तर वैदिक काल में पुत्री के जन्म को अच्छा नहीं माना गया था।

उत्तर वैदिक ग्रन्थ ⇒ * इनमें केवल तीन आश्रम ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ है
* जाबालोउपनिषद में चारो आश्रमों का वर्णन मिलता है।
* सबसे ज्यादा सबसे बड़ा लौहपुंज अतरंजीखेड़ा से मिला है।

आर्थिक जीवन ⇒ * लोगो ने खेती के व्यवसाय को अपनाया। क्योंकि लोहे के प्रसार ने खेती को सुलभ बना दिया।
* निष्क, सतमान जैसे सिक्को की चर्चा मिलती है।
* पाट की मूलभूत इकाई कृष्णल थी।
* रत्तिका और गुंजा भी तौल की एक इकाई थी।
* मिट्टी के एक विशेष प्रकार के बर्तन बनाये जाते थे। चित्रित, धूसर, मृदभाण्ड (P.G.W) कहा जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजनैतिक व्यवस्था ⇒ * राजा का पद वंशानुगत होने लगा ऋग्वैदिक कालीन कबीलो ने जनपद का पद ग्रहण किया।
* सभा समिति जैसी संस्थाओ का नियन्त्रण कम हुआ और राजा या राजन अधिक शक्ति सम्पन्न होने लगे।
* राजा मंत्रीयो तथा अधिकारियो की सहायता से शासन करता था अधिकारी वर्ग रत्निन कहा जाता था।

धार्मिक जीवन ⇒ * इस काल में इन्द्र के स्थान पर प्रजापति सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता हो गये थे।
* विष्णु को मनुष्य जाति के दुखो का अन्त करने वाला माना गया।
* विभिन्न कर्मकाण्डो तथा अंध विश्वासो का विस्तार हुआ जादू टोने तथा भूत पिशाचो के धर्म में स्थान बनाया।
* पुषन सूद्रो के देवता के रूप में प्रचलित थे।
* वैदिक संस्कृति में वेदो की संख्या चार है
1) ऋग्वेद 2) सामवेद 3) यजुर्वेद 4) अथर्ववेद

ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद की रचना कृष्ण द्वैपायन वेद व्यास ने किया
* इसमें 1028 सूक्त है तथा 1500 मंत्र है। (ऋग्वेद) [1500 - 1000]
* मंत्रो के उच्चारण करने वाले को पुरोहित को होतृ या होता कहा जाता था।
* ऋग्वेद में 2 से लेकर 7 मंडल वो पुराने तथा 1 और 10 नये है।
* इसमे 9 वे मण्डल में सोमरस तथा 10वें पुरुषसूक्त का उल्लेख मिलता है।
* इसके तीसरे मण्डल में विश्वामित्र द्वारा रचित गायत्री मंत्र का उल्लेख है।

सामवेद ⇒ * इसमें संगीत के सातो स्वरो का वर्णन किया गया है।
* इसके मंत्रो का उच्चारण करने वाले को 'उद्गाता' कहा जाता है।
* सामवेद में कुल 1549 ऋचाएँ है
* सामवेद को भारतीय संस्कृति का जनक कहा जाता है

यजुर्वेद ⇒ * इसमें यज्ञ, हवन आदि का उल्लेख किया गया है।
* इसके मंत्रो का उच्चारण करने वाले को अध्वर्यु कहा गया है।
* यजुर्वेद गद्य और पद्य दोनो में लिखा गया है इसलिए यजुर्वेद की मिली जुली शैली को चम्पू शैली कहा जाता है

Toppersnotes
Unleash the topper in you

अथर्ववेद ⇒ * अथर्ववेद की रचना अथर्वा ऋषि तथा अंगिरस ऋषि ने की थी इसलिए इसे अथर्वांगिरस वेद भी कहा जाता है।
अथर्ववेद में तन्त्र मंत्र जादू टोना और वशीकरण आते हैं।

वेदांग ⇒ वेदांग की संख्या छः बतायी जाती है।

वेदांग	उनसे सम्बन्धित विषय
शिक्षा	शुद्ध उच्चारण का उल्लेख
कल्प	यज्ञो का सम्पादन
व्याकरण	व्याकरण के नियम
निरुक्त	शब्दो की व्युत्पत्ति
छन्द	छन्दो का प्रयोग
ज्योतिष	खगोल विज्ञान

नोट :- कल्पसूत्र चार प्रकार के होते हैं।
1) श्रौत सूत्र 2) गृह सूत्र 3) धर्मसूत्र 4) शुल्वसूत्र (ज्यामितीय गणित)

* व्याकरण की सबसे पहली तथा व्यापक रचना 'पाणिनी अष्टाध्यायी' है।
* छन्द शास्त्र पर पिंगल मुनि का ग्रन्थ छन्द सूत्र उपलब्ध है।
* ज्योतिष के सबसे प्राचीन आचार्य लगधमुनि है।

ब्राह्मण ग्रन्थ ⇒ * ब्रम्ह का अर्थ यज्ञ है। अतः यज्ञीय विषयो के प्रतिपादक ग्रन्थ ब्राह्मण कहे गये।
* ब्राह्मण वेद अधिकांशतः गद्य में लिखे गये हैं।
* प्रत्येक वेद के लिए अलग से ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे गये।

आरण्यक ग्रन्थ ⇒ * वे ग्रन्थ जो ऋषियो द्वारा रचित ग्रन्थो को जंगल मे लिखा
* इनमें ज्ञान और चिन्तन को प्रधानता दी गयी है।

उपनिषद ⇒ * उपनिषद को वेदान्त भी कहा गया है।
* उपनिषद की संख्या 108 है।
* भारत का आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' है। मुडकोउपनिषद से लिया गया है।
* नाचिकेता तथा यम का सम्पाद 'कठोपनिषद' है।

स्मृति साहित्य

स्मृति साहित्य के अन्तर्गत स्मृति पुराण तथा धर्मशास्त्र आते हैं।
* मनु स्मृति सबसे प्राचीन स्मृति ग्रन्थ है। दूसरी शताब्दी ई०पू० शुंग काल में हुई थी।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* पुराणो की संख्या 18 है। इनमे मुख्य - वायु, मतस्य, ब्राह्मण, गरूण आदि है।
* विष्णु पुराण का सम्बन्ध मौर्य वंश से है।
* मत्स्य पुराण का सम्बन्ध सातवाहन से है।
* वायु पुराण का सम्बन्ध गुप्त वंश से है।
* सबसे पुराना पुराण मत्स्य पुराण है।
* इनके संकलन कर्त्ता महर्षि लोमहर्ष है इनके पुत्र उग्रश्रवा माने जाते है।
* रामायण और धर्मशास्त्र एक ही श्रेणी मे आते है।
* रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी
* महाभारत की रचना वेदव्यास ने की थी इसे 'जय संहिता' कहा जाता है।

* भारतीय दर्शन प्रवर्तक

सांख्य	कपिल
न्याय दर्शन	गौतम
योग	पतंजलि
वैशेषिक	कणाद
पूर्व मीमांसा	जैमिनी
उत्तर मीमांसा	बादरायण

* 16 जनपदो की राजधानी

जनपद	राजधानी
अंग	चम्पा
मगध	गिरीब्रज या राजगृह
काशी	वाराणसी
कोशल	श्रावस्ती
बज्जी	वैशाली
मल्ल	कुशीनारा
चेदि	सुक्तिमति
वत्सय	कौशाम्बी
कुरु	इन्द्रप्रस्थ
पांचाल	काम्पिल्य
सूरसेन	मथुरा
गांधार	तक्षशिला
कम्बोज	राजपुरा
अश्मक	पोतन या पोटिल
अवन्ति	उज्जयिनी
मत्सय	विराट नगर

* इन महाजनपदो का विवरण बौद्ध ग्रन्थ के 'अंगोत्तर' तथा जैन धर्म के 'भगवती' सूत्र मे मिलता है।
* बौद्ध के जन्म के पूर्व 6 शताब्दी ई० पू० मे 16 महाजनपदो में बटा हुआ है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

जैन धर्म

* ऋषभ देव (आदिनाथ) पहले तीर्थंकर थे जिन्हे जैन धर्म का संस्थापक माना जाता है। जैन धर्म के 24वें तथा अन्तिम तीर्थंकर महावीर स्वामी थे।
* महावीर स्वामी का जन्म 540 ई०पू० वैशाली के कुण्डग्राम बिहार मे हुआ।
* इनके पिता का नाम 'सिद्धार्थ' तथा माता का नाम 'त्रिशला' था जो लिच्छवी के शासक चेटक की बहिन थी।
* महावीर की पत्नी का नाम यशोदा था।
* यशोदा से जन्म लेने वाली पुत्री प्रियदर्शनी का विवाह जमाली से हुआ जो महावीर का प्रथम शिष्य था।
* इन्होने 30 वर्ष की आयु मे घर त्याग दिया तथा 12 वर्ष के बाद ऋजुपालिका नदी के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई जिसके बाद इन्हे महावीर, जीन, कैवालिन कहा गया
* जैन धर्म मे पूर्ण ज्ञान को कैवल्य ज्ञान कहा गया है। इन्होने अपना प्रथम उपदेश राजगृह मे पाली भाषा मे दिया।
* इनकी मृत्यु 72 वर्ष की आयु मे पावागिरी में 468 ई०पू० मे हुई।

प्रमुख तीर्थंकर	नम्बर
ऋषभ देव	1
आजितनाथ	2
सम्भवनाथ	3
नेमिनाथ	21
अरिष्टनेमि	22
पार्श्वनाथ	23
महावीर स्वामी	24

जैन धर्म के सिद्धान्त, संघ तथा धर्मग्रन्थ

* पार्श्वनाथ के चार व्रत ⇒ 1 ⇒ अहिंसा (हिंसा ना करना)
2 ⇒ अमृषा (झूठ ना बोलना)
3 ⇒ अस्तेय (चोरी ना करना)
4 ⇒ अपरिग्रह (सम्पत्ति अर्जित ना करना)
Note ⇒ महावीर ने पाँचवा व्रत ब्रम्हचार्य जोडा है।
* जैन साहित्य को अंग कहते है

* जैन मठो को 'बसदि' कहा जाता है
* जैन ग्रन्थो को पूर्व या आगम कहा जाता है। जिनकी रचना प्राकृत भाषा में हुई
* त्रिरत्न जैन दर्शन के अनुसार मोक्ष के लिये तीन तत्वो का होना जरूरी है
1) सम्यक् दर्शन 2) सम्यक ज्ञान 3) सम्यक कर्म
* जैनीयो द्वारा शरीर को भूखा रखकर प्राण त्यागने को सल्लेखना विधि कहा जाता है।
* जैन संघ को दो भागो में बाँटा ⇒ श्वेताम्बर (भद्रबाहु के समर्थक)
दिगम्बर (स्थूलभद्र बाहु के समर्थक)
* जैन संगतियाँ ⇒
पहली
द्वितीय